

दीगो रिबेरा

मेक्सिकन आर्टिस्ट

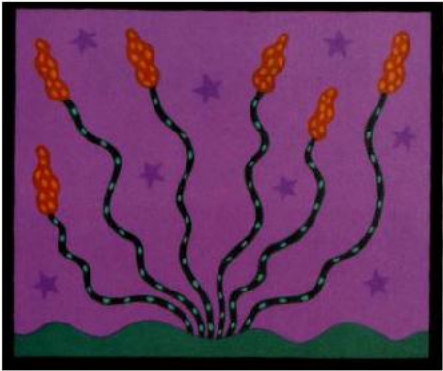


जीनेट और जोनाह

हिंदी : विदूषक

दीगो रिबेरा

मेक्सिकन आर्टिस्ट

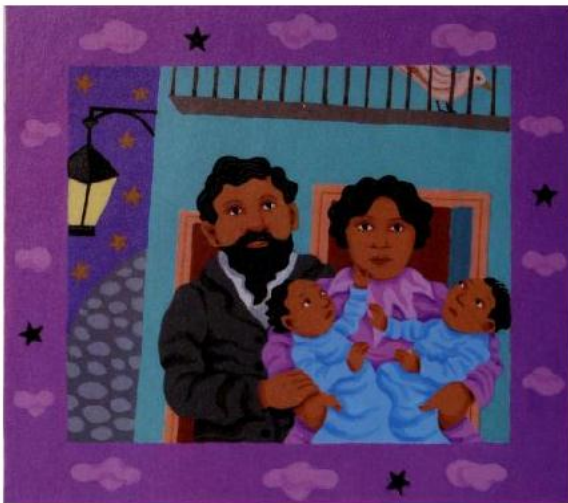






मेक्सिको की ऊंचे पहाड़ों और घने जंगलों
में एक छोटा शहर था.

उसका नाम था गुआनआजूऑटो.



गुआनआजूऑटो में एक खुश दंपत्ति रहता था. वो खुश इसलिए थे क्योंकि उनके दो जुड़वां बेटे थे. बेटों का नाम था कार्लोस और दीगो.



पर कार्लोस बहुत जल्दी ही बीमार पड़ा
और फिर मर गया. उस समय वो दो साल
से भी कम का था.



फिर बेचारा दीगो बिल्कुल अकेला रह गया. फिर वो भी अपने भाई कार्लोस जैसे ही बीमार हुआ. डॉक्टरों ने दंपत्ति को दीगो की देखभाल के लिए एक नर्स रखने की सलाह दी. उन्हें एक महिला मिली जिसका नाम था **अन्तोनिया**. वो एक परंपरागत इंडियन नर्स थी.



अन्तोनिया, दीगो को पहाड़ियों में अपनी झोपड़ी में ले गई. वहां पर साफ़-ताज़ी हवा थी. वहां पर खूब सारी धूप थी.



अन्तोनिया की झोपड़ी बहुत छोटी थी.
पर वो दीगो के लिए एक बहुत अच्छी
जगह थी.



झोपड़ी के अन्दर जादुई चीज़ें थीं.

वहां एक आला था जिसमें मोमबत्तियां
और छोटी गुड़ियां रखीं थीं. वहां तरह-
तरह की जड़ी-बूटियाँ भी थीं. इलाज में
अन्तोनिया, उनका उपयोग करती थी.



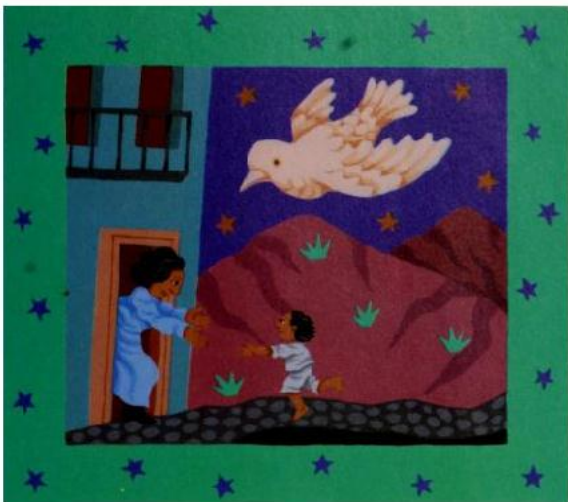
दीगो सोते समय भी अन्तोनिया की
जड़ी-बूटियाँ की खुशबू सूंघा करता था.



दिन के समय दीगो जंगल में खेला करता था. जंगल के जानवर उसके दोस्त बन गए थे.



एक दिन दीगो ने सीटी बजाई. उसके
उत्तर में तुरंत एक तोते ने सीटी बजाई.
वो तोता, दीगो का पालतू तोता बन
गया.



धीरे-धीरे दीगो स्वस्थ और ताकतवर बना.
फिर उसके घर वापिस जाने की बारी आई.



घर आने की खुशी में उसके माता-पिता ने उसे कुछ रंगीन चाक दीं. दीगो दिन भर उनसे चित्र बनाता रहता. वो दीवार को भी नहीं छोड़ता.



दीगो को चित्रकारी इतनी पसंद थी कि उसके पिता ने घर में उसके लिए एक स्टूडियो बना दिया, जहाँ सब दीवारों पर ब्लैकबोर्ड थे. दीगो, दिन भर चित्र बनाता रहता था. धीरे-धीरे उसके चित्रों से सारी दीवारें भर गईं.



स्कूल में दीगो को बहुत परेशानी होती थी. वो दिन भर अपने सपनों में खोया रहता था.



घर वापिस आकर वो अपने हाथ के बने
सैनिकों के साथ खेलता. उसने खुद अपने
हाथों से 5000 से ज्यादा सैनिक बनाये
थे!



उसे रंगीन चीज़ों से बहुत प्रेम था. वो चर्च इसलिए जाता था क्योंकि वहां दीवारों पर अनेक छोटे और सुन्दर चित्र बने होते थे.



अंत में माता-पिता ने आर्टिस्ट बनने के लिए उसे एक आर्ट-स्कूल में भेजा. अन्य छात्रों के मुकाबले वो उम्र में बहुत छोटा था. यह उसके लिए बड़े गर्व की बात थी.



पर आर्ट-स्कूल में दीगो बहुत जल्दी ही ऊब गया. उसे स्कूल में मॉडल्स के चित्र बनाना पसंद नहीं था. वो असली ज़िन्दगी को, चित्रों में उतारने को उत्सुक था. उसने वो किया भी. वो जो भी देखता, वो उनके चित्र बनाता.



उसने “मृत्यु-दिन” त्यौहार के चित्र बनाए.
उस दिन मेक्सिको में लोग अपने पूर्वजों
और मृत प्रियजनों को याद करते हैं.



उसने उत्सवों और त्यौहारों में लोगों के चित्र बनाए. उन खास दिनों पर लोग रंग-बिरंगे मुखौटे पहनकर सड़कों पर नाचते हैं.



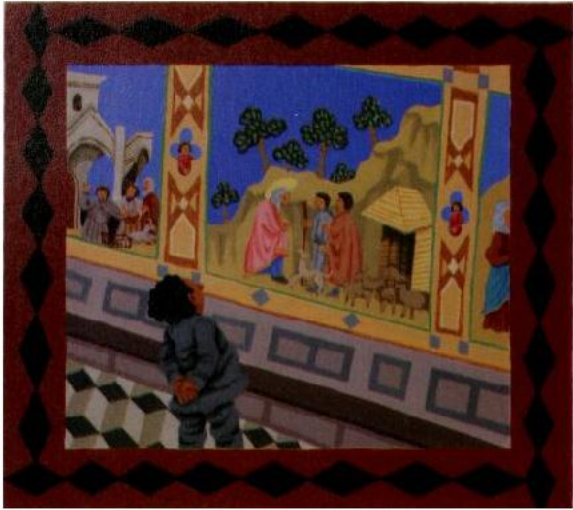
एक दिन दीगो को एक भयंकर चीज़ दिखी. उसने पुलिस को आन्दोलनकारी मजदूरों पर गोली चलाते हुए देखा. उसने उनके भी कई चित्र बनाए. क्यों? क्योंकि वो एक असलियत थी. उसने उसे खुद देखा था.



ऐसा नहीं था कि दीगो को सब कुछ अच्छा लगता था. इसलिए उसने बराबरी और समानता की लड़ाई लड़ने में गरीबों की मदद की. गरीब मजदूर अधिक मजदूरी और बेहतर ज़िन्दगी के लिए लड़ाई लड़ रहे थे. दीगो को सबसे ज्यादा प्रेम आम लोगों से था.



उसे चित्रकारी से बहुत प्रेम था. इसलिए वो पेरिस गया – जो दुनिया में चित्रकारी का सबसे महान केंद्र माना जाता है. पर पेरिस में भी वो लगातार मेक्सिको के बारे में ही सोचता रहा.



फिर दीगो इटली गया. वहां चर्चों के अन्दर
उसे बेहद सुंदर भित्ती-चित्र (भित्ती-चित्र =
म्यूरल्स) दिखे.

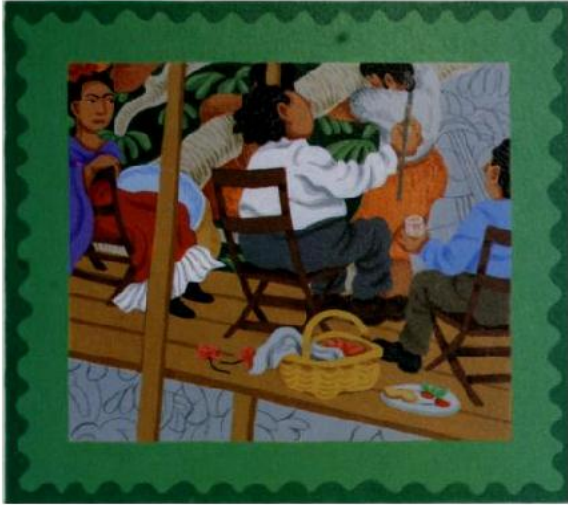
उन्हें देखकर उसके दिमाग में एक विचार
आया.



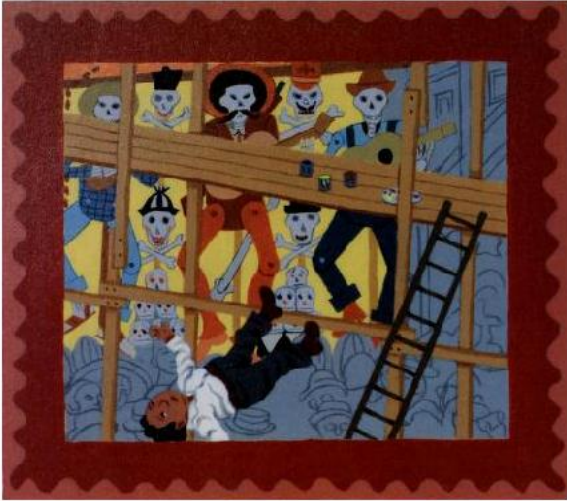
वो मेक्सिको वपिस लौटकर उन विचारों को असलियत में बदलने को लालायित था.



फिर मेक्सिको में आकर उसने भित्ती-चित्र बनाना शुरू किए. उसके भित्ती-चित्र जग-प्रसिद्ध हुए. उसने भित्ती-चित्रों में मेक्सिको के आम लोगों की जिंदगी को दर्शाया.

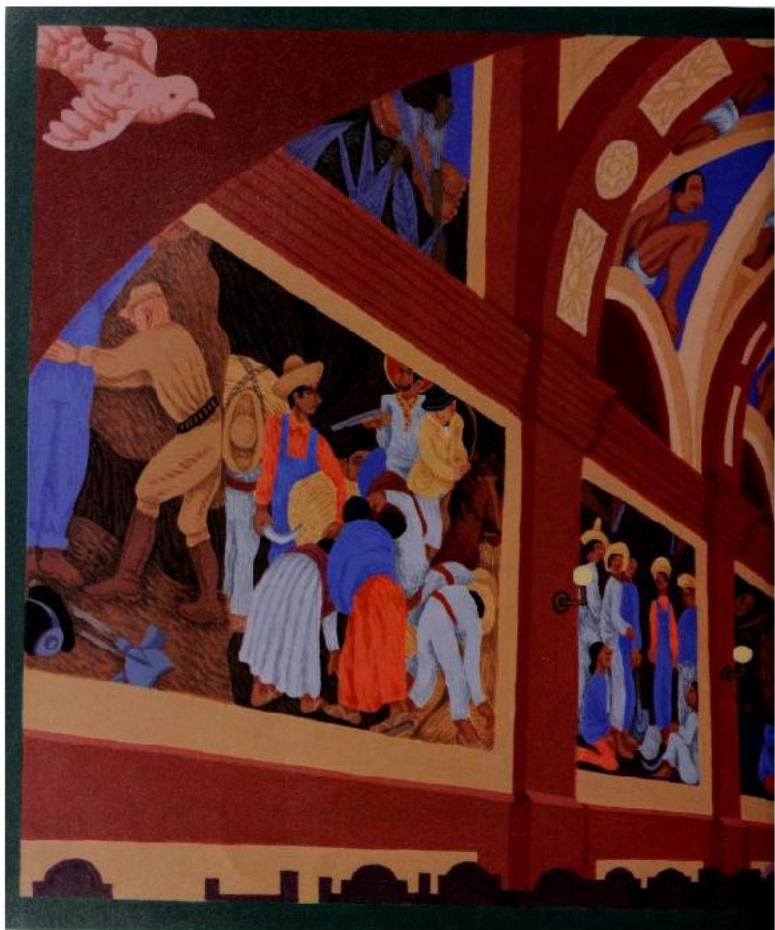


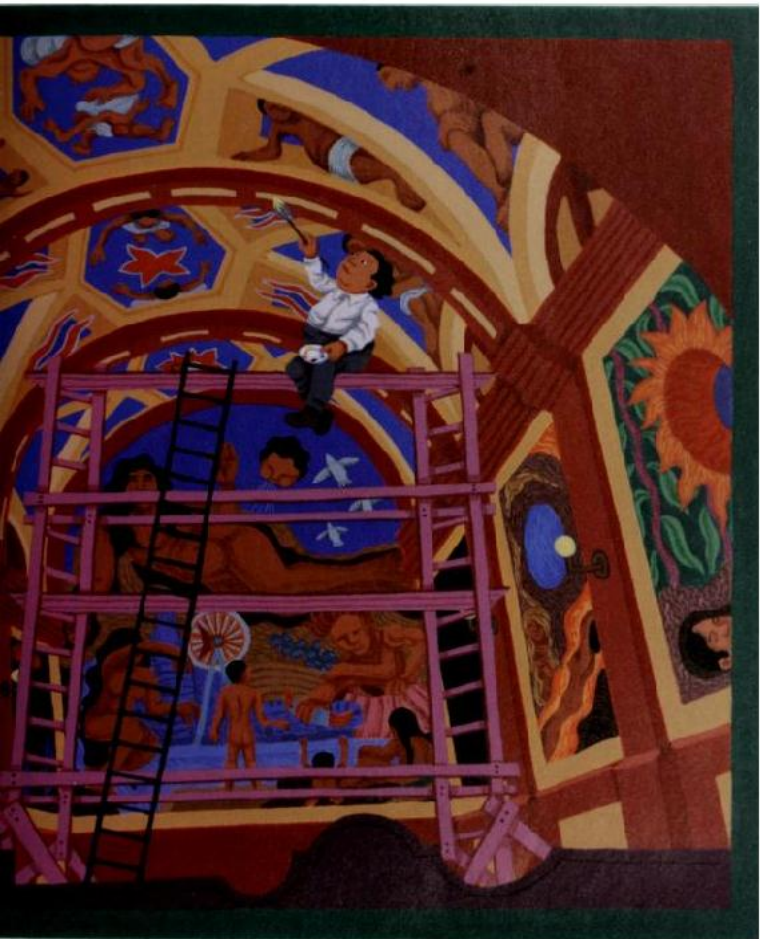
दीगो, दिन-रात पेंटिंग करता रहता था.
अक्सर मित्रों को उससे मिलने के लिए सीढ़ी
पर चढ़ना पड़ता था, क्योंकि वो मचान पर
बैठा किसी दीवार पर चित्र बना रहा होता
था.



एक दिन मचान पर खड़े होकर पेंट करते-करते दीगो इतना थक गया कि वो मचान से नीचे गिर गया.

पर उसे ख़ास चोट नहीं लगी. अगर चोट आई भी तो उसकी उसने कुछ परवाह नहीं की. उसे बस अपने भित्ती-चित्रों की फ़िक्र थी. उन चित्रों में उसने वो सब कुछ दर्शाया था जो उसने देखा था. इसमें अन्तोनिया की झोपड़ी से लेकर “मृत्यु-दिन” पर्व और उत्सव, रेगिस्तान के चित्र, जंगलों के चित्र सभी शामिल थे. उसके भित्ती-चित्र बहुत बड़े आकर के होते थे. उन जैसे भित्ती-चित्र पूरी दुनिया में और कहीं नहीं थे.







दीगो रिवेरा एक बहुत मशहूर आर्टिस्ट बना. उसकी पेंटिंग्स को देखकर हर मेक्सिकन नाज़ करता था. वे अब भी करते हैं.

दीगो रिवेरा के बारे में दो शब्द

होसे दीगो रिवेरा का जन्म 8 दिसंबर 1886 को

गुआनआजूऑटो, मेक्सिको में हुआ. आज दुनिया में बहुत से लोग उसके काम के बारे में जानते हैं. क्यों? क्योंकि उसने आर्ट की परिभाषा को बदला. बहुत से आर्टिस्ट पेंटिंग्स बनाते हैं जिससे कि वो उन्हें ऊंची आर्ट-गैलेरियों में लटका सकें. दीगो रिवेरा अपनी पेंटिंग्स आम जनता के लिए खुले स्थानों पर बनाता था, जिससे उन्हें सभी लोग देख सकें. दीगो रिवेरा के लिए सड़क की दीवारें आम मेक्सिकन लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने के आदर्श जगहें थीं. उसने दुनिया के मजदूरों और मेक्सिको के गरीब लोगों के लिए कला रचना की. इसलिए उसे पूरे मेक्सिको में दीवारों पर चित्र बनाने के लिए बुलाया गया - स्कूलों में, राजमहलों में और सरकारी दफ्तरों में. दीगो की प्रसिद्धी मेक्सिको तक ही सीमित नहीं रही. उसे सैन-फ्रांसिस्को, डेट्रॉइट, और न्यू-यॉर्क सिटी में भी भित्ती चित्र बनने के लिए आमंत्रित किया गया. उसके काम ने अमेरिका के आर्टिस्ट्स को भी दीवारों पर पेन्ट करने के लिए प्रेरित किया. एक अनुमान के अनुसार **दीगो रिवेरा** ने अपनी ज़िन्दगी में ढाई-मील से भी ज्यादा लम्बाई के भित्ती चित्र पेन्ट किए. दीगो रिवेरा का देहांत 24 नवम्बर 1957 को अपने स्टूडियो में काम करते हुए हुआ.

1991 में इस पुस्तक को *द न्यू-यॉर्क टाइम्स* की
सचित्र पुस्तकों में सर्वप्रथम पुरस्कार मिला.
फिर उसे *पेरेंट्स चॉइस* अवार्ड भी मिला.

